संगोष्ठी संदर्भ

समाज विज्ञान विश्व की एक अतीव महत्त्वपूर्ण शाखा है। समाज विज्ञान के अंतर्गत वर्तमान समय में एक प्रमुख प्रश्न है कि समाज विज्ञान की सामान्य अवधारणाएं और सिद्धांतों से क्या भारत सहित वैश्विक स्तर पर उत्पन्न हुए प्रश्नों और चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है? इस प्रश्न को लेकर ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है।

समाज का चिंतन और अध्ययन एक पूर्ण वैज्ञानिक शाखा है, जिसमें सार्वभौमिकता को एक अंतरंग विशेषता के रूप में स्वीकार किया जाता है, लेकिन इसके अंतर्गत सापेक्षता के सिद्धांतों को भी उतनी ही महता मिलती है। इसलिए, वर्तमान अकादमिक संरचना और स्वरूप में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि, भारत के अलावा वैश्विक स्तर पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप में बदलाव का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि हम हमारे चिरस्थाई विचार "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:" को सामाजिक चिंतन का आधार बनाएं।

आज सम्पूर्ण विश्व अपने संरचनात्मक विकास का ढांचा तैयार कर रहा है, लेकिन हजारों वर्ष पहले विश्व के सामने भारत ने अपने अलौकिक दृष्टिकोण "विद्ययाऽमृतमश्नुते" को प्रस्तुत किया था। भारत सरकार की '2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति' और प्रधानमंत्री जी का 'विकसित भारत 2047' का अवधारणात्मक स्वरूप इस दिशा में एक बड़ा कदम हैं, जो अकादमिक चिंतन को मानव ज्ञान और विज्ञान के साथ सामर्थ्यपूर्ण बना रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय समाज वैज्ञानिकों ने भारतीय समाज को समझने और जानने के लिए अपने स्वतंत्र चिंतन के आधार पर मौलिक विचार रखे, लेकिन बौद्धिक लामबंदी के कारण उनका चिंतन अकादमिक चर्चा में सही स्थान पर नहीं आ सका।

वैश्विक स्तर पर अनेकों दृष्टिकोण से अपने-अपने समाज को समझने और उनके सामने उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सही उत्तर ढूंढने का प्रयास हो रहा है, लेकिन वैश्विक जगत अपने सामने उपस्थित चुनौतियों का सही उत्तर ढूंढने में सक्षम नहीं हो रहा है। न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर आई हुई चुनौतियों का उत्तर ढूंढने के क्रम में हमें सर्वप्रथम भारत के सनातन चिंतन को जानना होगा, जिसे स्वामी विवेकानंद जी ने सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध कर पूरी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानंद जी का संदेश न केवल भारत का धार्मिक और आध्यात्मिक संदेश था, बल्कि भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन और व्यवहार का पूरा परिचायक था।

भारत का लोक व्यवहार और राष्ट्रीय चेतना को स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व मंच पर व्यक्त किया। जिस काल में स्वामी जी का चिंतन प्रकट हुआ, वह काल भी मानव जीवन के लिए वर्तमान काल से कोई अधिक अलग नहीं था, केवल स्वरूपगत परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन में वृद्धि और शारीरिक सुख सुविधाओं का विकास हुआ, लेकिन इन सबके उपरांत भी आज मानव जीवन उतनी ही संकट की स्थिति में है।

दुनिया के समाज वैज्ञानिकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वर्तमान में वैश्विक स्तर पर उपस्थित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का प्रत्युत्तर देने का मार्ग क्या है। समाज की दिशा और उसके बाद उत्पन्न हुई चुनौतियों का सही उत्तर ढूंढने का प्रयास स्वामी विवेकानंद जी के चिंतन के आलोक में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से किया जाएगा।

संगोष्ठी: उप-विषय

- मौलिक अवधारणा एवं सिद्धांतों का संबंधीकरण
- प्राचीन/पुरातन संस्कृत और विवेकानन्द
- संस्कृति बनाम सभ्यता मूलक दृष्टिकोण एवं विवेकानंद
- भारतीय चिंतन में अध्यात्म, धर्म एवं विवेकानंद
- भारतीय अध्यात्मक बनाम पाश्चात्य तार्किकता का समाजशास्त्रीय परिपेक्ष
- विश्व के पथ का तुलनात्मक समीक्षा एवं विवेकानंद
- विश्व की अवधारणा एवं विवेकानंद
- स्त्री (परिवार) चिंतन एवं स्वामी विवेकानंद
- राष्ट्रवाद एवं स्वामी विवेकानंद
- संघर्षवादी, समन्वयवादी सिद्धांत एवं स्वामी विवेकानंद

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध सार भेजने की अंतिम तिथि: 20 मई 2024

सम्पूर्ण शोधपत्र जमा करने की अंतिम तिथि: 31 मई 2024

नोट- शोधपत्र प्रस्तुति हाइब्रिड मोड में किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश

शोध सार

शब्द सीमा (250-350 शब्द)
हिंदी फोंट- कोकिला/मंगल/निर्मला
हिंदी फोंट का आकार- 16
अंग्रेजी फोंट- टाइम्स न्यू रोमन
अंग्रेजी फोंट का आकार- 12
पंक्ति रिक्ति 1.5
एपीए उद्धरण शैली
फाइल टाइप- माइक्रोसॉफ्ट वर्ड

सम्पूर्ण शोधपत्र

शब्द सीमा (3000-5000 शब्द)
हिंदी फोंट- कोकिला/मंगल/निर्मला
हिंदी फोंट का आकार- 16
अंग्रेजी फोंट- टाइम्स न्यू रोमन
अंग्रेजी फोंट का आकार- 12
पंक्ति रिक्ति 1.5
एपीए उद्धरण शैली
फाइल टाइप- माइक्रोसॉफ्ट वर्ड

शोध सार तथा सम्पूर्ण शोधपत्र *vivekanandcontemplation@gmail.com* ई-मेल पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन के लिए **यहां क्लिक करें**
अथवा क्यूआर कोड को स्कैन करें।

रजिस्ट्रेशन शुल्क
शिक्षक- ₹500
शोधार्थी- ₹300
विद्यार्थी- ₹200

समिति के शिफारिश पर शहर से बाहर के शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता को निःशुल्क आवास की सुविधा उपलब्ध कराया जाएगा।

बैंक विवरण
Account Holder Name:
Central University of Himachal Pradesh
Account No:
2062101012323
Name of Bank:
Canara Bank
IFSC Code:
CNRB0002062
Account Type:
Saving

प्रधान संरक्षक

प्रो. सत प्रकाश बंसल
कुलपति,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि

संयोजक
डॉ. गिरीश गौरव
82101-81930
94304-45897

सह संयोजक
डॉ. संजय कुमार
92127-94941

सह संयोजक
डॉ.निरूपोमा कार्डोंग
70046-8543

आयोजन सचिव
प्रो.अनिल कुमार
94191-94852

सह संयोजक
डॉ. योगेश कुमार गुप्ता
94136 28280

सह संयोजक
डॉ.मंगला ठाकुर
94597-81924

For Technical Support/ Clarification
Yasir Arfat, 95553-05920 | *Som Chand, 83509-98940*
Rani Jairaj, 78898-84775 | *Babli Joshi, 94186-96648*

समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

राष्ट्रीय संगोष्ठी

आधुनिक समाज दिशा एवं चुनौतियां: वांछित प्रत्युत्तर स्वामी विवेकानंद

सहयोगी
राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् (नई दिल्ली)
भारतीय मत, पंथ, संप्रदाय एवं समेटिक अध्ययन केंद्र, सीयूएचपी

वित्त-पोषित
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ (MAKAIAS), कोलकाता

09-11 जून 2024

स्थान:
सेमिनार हॉल, धौलाधार परिसर-1
धर्मशाला

हाइब्रिड मोड

About the Conference

The field of sociology presents a significant question in the present time. Can the questions and challenges that have arisen globally, including in India, be addressed through the general concepts and principles of sociology? There's speculation surrounding this issue.

The study and contemplation of society constitute a complete scientific branch, wherein universality is acknowledged as an inherent specialty. However, the principles of relativity also hold significant importance within its scope. Therefore, it's natural for the current academic structure and form to prompt questions regarding the study of changes in social, cultural, economic, and political aspects not just in India but on a global scale, given the consequences of challenges faced by European society over time. Hence, it becomes imperative to base our perpetual thinking on the foundation of social thought: "Sarve Bhavantu Sukhinah, Sarve Santu Niramaya."

Today, the entire world is preparing the framework for its structural development, but thousands of years ago, the world presented its transcendental perspective: "Nature Protected, Protected." The concept-driven nature of India's National Education Policy 2020 and Prime Minister's vision of 'Developed India 2047' are significant steps in this direction, making academic thought capable of harmonizing with human and natural alignments. Following independence, Indian sociologists laid down fundamental principles based on their independent thinking to understand and comprehend Indian society. However, due to intellectual constraints, their thinking couldn't find the right place in academic discourse.

Efforts are being made globally to understand one's own society from various perspectives and to find appropriate responses to the challenges it faces. However, the global community is struggling to find adequate answers to the challenges it faces. In the process of finding solutions to challenges not only in India but also at a global level, it is essential for us to first understand India's eternal thought, which Swami Vivekananda presented systematically and methodically before the whole world. Swami Vivekananda's message was not only a religious and spiritual message for India but also a complete indicator of India's social and cultural thought and behavior.

Swami Vivekananda articulated the behavior of Indian society and national consciousness on the world stage. The time when Swami Ji's thinking emerged was not much different from the present era for human life. Only superficial changes occurred in human life, with progress and development of physical comforts, but beyond all these, today human life is in a state of crisis.

The greatest challenge before the world's sociologists today is to find the path to respond to the global-level social, cultural, economic, and political challenges present at present. An attempt will be made in this national conference in light of the thinking of Swami Vivekananda to find the right answer to the direction of society and the challenges that have arisen as a result.

CONFERENCE THEMES:

- Integration of Fundamental Concepts and Principles
- Ancient Sanskrit and Swami Vivekananda
- Cultural versus Civilizational Perspective and Swami Vivekananda's View
- Spirituality and Religion in Indian Thought according to swami Vivekananda
- Comparative Perspective of Indian Spiritualism vs Western Rationality in Sociological Context
- A Comparative Review of World Paths : In the Context of the Spiritual Path
- Concept of Education and swami Vivekananda's Ideals
- Women Empowerment (Family) and Swami Vivekananda
- Cultural Nationalism and Swami Vivekananda
- Conflict Theory, Harmony theory and Swami Vivekananda's Ideals

IMPORTANT DATES

Abstract Submission Deadline: 20th May 2024

Full Paper Submission Deadline: 31st May 2024

Note: Hybrid mode is available for paper presentations

SUBMISSION GUIDELINES

Abstract

Word Limit (250-350 words)
Hindi Font: Kokila/Mangal/Nirmala
Size of Hindi Font: 16
English Font: Times New Roman
Size of English Font: 12
Line Spacing: 1.5
APA Citation Style
File Type: Microsoft Word

Full Paper

Word Limit (3000-5000 words)
Hindi Font: Kokila/Mangal/Nirmala
Size of Hindi Font: 16
English Font: Times New Roman
Size of English Font: 12
Line Spacing: 1.5
APA Citation Style
File Type: Microsoft Word

the abstract and the complete research paper should be sent to vivekanandcontemplation@gmail.com

For registration Click Hare
or scan the QR code

Registration Fee

Academician - ₹500
Scholar- ₹300
Student- ₹200

Based on the committee's recommendation, researchers from outside the city will be provided accommodation facilities.

Bank Details

Account Holder Name:
Central University of Himachal Pradesh
Account No:
2062101012323
Name of Bank:
Canara Bank
IFSC Code:
CNRB0002062
Account Type:
Saving

Patron

Sat Prakash Bansal
Vice Chancellor,
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala

Convener
Dr. Gireesh Gourav
82101-81930
94304-45897

Organize Secretary
Prof. Anil Kumar
94191-94852

Co-Convener
Dr. Sanjay Kumar
92127-94941

Co-Convener
Dr. Yogesh Kumar Gupta
94136 28280

Co-Convener
Dr. Nirupoma Kardong
70046-8543

Co-Convener
Dr. Mangla Thakur
94597-81924

तकनीकी सहायता/ सहयोग

यासिर अरफात, 95553-05920
रानी जयराज, 7889884775
सोम चंद, 83509-98940
बबली जोशी, 94186-96648

Department of Sociology and Social Anthropology

Central University of Himachal Pradesh (CUHP)

National Conference

Modern Society - Direction and Challenges: Aspiring Responses from Swami Vivekananda

In Collaboration with

Rashtriya Samaj Vigyan Parishad, New Delhi
Centre for Bhartiya, Panth, Matt, Sampraday and Semitic Religions, CUHP

Conference Funding

Indian Council for Social Science Research (ICSSR), New Delhi
Maulana Abul Kalam Azad Institute of Asian Studies (MAKAIAS), Kolkata

09th-11th June 2024

Venue
Seminar Hall, Dhauladhar Parisar-1
Dharamshala, Himachal Pradesh

HYBRID MODE